ISSN : 2581-3943

Eklavya

A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal

School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)

Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in

Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

INDEX

1.	जेंडर शिक्षा के मुद्दे और चुनौतियाँ	वीनू	2-11
2.	A Study Of Principal's Attitudes Towards Total Improvement Of Quality Education At Primary Level In Dang District	Dr. Mukeshbhai N. Tandel	12-18
3.	ગ્રંથાલય અને માહિતી સેવાઓમાં આઈ.સી.ટી.ની અસરકારકતા	Dr.Manisha N. Gurjar	19-25
4.	*शिक्षा में मीडिया का योगदान*	*डॉ.भावेश के. शाह*	26-30

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

जेंडर शिक्षा के मुद्दे और चुनौतियाँ

वीनू

(शोधार्थी .डी.पीएच)

हिंदी अध्ययन केन्द्र

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय-सेक्टर ,29गुजरात ,गांधीनगर ,

इमेल -veenu3420@gmail.com

सार संक्षेप

वैश्विक सन्दर्भ में जेंडर शिक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस में भी स्त्री शिक्षा और शिक्षा के अधिकार का समान बंटवारा एक ऐसी चुनौती है, जिसके सम्बन्ध में विविध देशों ने प्रयास आरम्भ किये हैं । इसके अंतर्गत भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह और भी जरूरी हो जाता है लिंग भेद, अवसर और अधिकारों के समान बंटवारे का जमीनी स्तर पर आंकलन किया जाए । गौरतलब है कि भारत में महिला आन्दोलन की संरचना सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनितिक दृष्टि से बहुत जटिल रही है । राजनीति में भी अधिकारों के सामान बंटवारे की भूमिका को इस रूप में देखा गया है कि देश की आधी आबादी का राजनीति में प्रतिशत 33 फीसदी से भी कम रहा । इस लेख में पितृसत्तावादी तंत्र परम्परागत बेड़ियों से जकड़ी व्यवस्था से विपरीत अपना मार्ग, अपने हिस्से का आसमान तलाशती स्त्री और भारत में नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार का अवलोकन किया जाएगा । नारीवाद एक वृहद् अवधारणा है एवं यह लेख एक विशाल और जटिल क्षेत्र के केवल एक टुकड़े के साथ जुड़ा हुआ है, और इसे भारत में नारीवादी सिद्धांत के रूप में एक सिंहावलोकन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

परिचय

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

नारीवाद और जेंडर शिक्षा-

जेंडर शिक्षा का सीधा सम्बन्ध लिंग के आधार पर किये जाने वाले भेद, निषेध और अवसर की समानता के अधिकार से है । नारीवाद शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनितिक पहलुओं पर जोर देता है और उत्पादन के साधनों पर स्त्री-पुरुष के समान अधिकार की वकालत करता है । 'उत्पादन' में महिलाओं द्वारा किये जाने वाले श्रम की भूमिका के सम्बन्ध में नारीवाद इस बात पर जोर देता है कि श्रम के 'सार्वजनिक' और 'निजी' पहलू आपस में जुड़े हुए हैं। नारीवाद इस प्रकार, अपने सार्वजानिक स्रोत एवं परिवार और प्रजनन की (निजी) संरचनाओं में स्त्री की भूमिका को महत्त्व देता है । जैसा कि मीना गोपाल बताती हैं, 'तकनीकी उन्नयन और आधुनिकीकरण के लाभ' उनकी पहुंच से बाहर हैं। दाई का काम और हाथ से मैला ढोना इनमें से कुछ मजदूर हैं, 'जो घरेलू क्षेत्र और अनौपचारिक श्रम बाजार में सामाजिक प्रजनन का हिस्सा बने हुए हैं' (गोपाल 2013: 93)। इस प्रकार, जनता, घरेलू और सामाजिक दायित्वों से जुड़े सम्बन्ध आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

'प्रजनन' में महिलाओं की भूमिका और घरेलू श्रम-

यह सर्वविदित है कि प्रजनन एक प्राकृतिक जैविक क्रिया है । किन्तु न केवल श्रम के यौन विभाजन का आधार ही इसके ढांचे को सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों द्वारा प्रभावित करता है, बल्कि कुछ वैचारिक धारणाएं भी इस मुद्दे को लेकर अस्तित्व में आई हैं। पितृसत्तावादी ढाँचे के अंतर्गत एक ओर, महिलाओं को शारीरिक रूप से कमजोर और भारी शारीरिक श्रम के लिए अनुपयुक्त माना जाता है, लेकिन साथ ही, वर्तमान समय में और निकट अतीत में भी जब महिलाएं जो शारीरिक कार्य करती हैं, उन्हें मशीनीकृत किया जाता है, जिससे यह हल्का, सस्ता और बेहतर भुगतान दोनों हो जाता है। साथ ही

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

पुरुषवर्चस्ववादी श्रम क्षेत्र में पुरुष नई मशीनरी का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, और महिलाओं को बाहर कर दिया जाता है। न उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है और न ही सामान वेतन ही ।(वीनू,2020.112) यह लिंग-भेद न केवल कारखानों में होता है, बल्कि उस काम के साथ भी होता है जो परंपरागत रूप से महिलाओं द्वारा समुदाय के भीतर किया जाता था । हालाँकि स्त्री-पुरुष कार्यविभाजन भी पितृसत्तावादी ढाँचे की ही दें है जिसके तहत जितने अधिकार पुरुष के हिस्से आए हैं उससे कहीं अधिक कर्तव्यों के बोझ से स्त्री चरित्र को ढक दिया गया । (वीनू,2021.100) उदाहरण के लिए, जब बिजली से चलने वाली आटा मिलें अनाज के हाथ से पीसने की जगह लेती हैं, या मशीन से बने नायलॉन मछली पकड़ने के जाल पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा बनाए गए जालों की जगह लेते हैं, तो यह पुरुष हैं जिन्हें इन नौकरियों को लेने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और महिलाओं को अन्यत्र स्थानांतरित हो जाने के लिए मजबूर किया जाता है। यहां तक कि कम वेतन और अधिक कठिन शारीरिक श्रम में भी। महिलाएं जो अवैतनिक कार्य करती हैं उनमें ईंधन, चारा और पानी का संग्रह, पशुपालन, कटाई, सिलाई, बुनाई, पशुधन रखरखाव, रसोई बागवानी और कुक्कुट पालन शामिल हैं जो पारिवारिक संसाधनों को बढ़ाते हैं। (वीनू, 2022. 323) यदि महिलाएं यह काम नहीं करतीं, तो इन सामानों को बाजार से खरीदना पड़ता, मजदूरी के लिए किराए पर ली जाने वाली सेवाएं, या परिवार को बिना पारिश्रमिक, काम करना पड़ता। हालांकि, लिंग भूमिकाओं के बारे में धारणाएं इतनी स्वाभाविक हैं कि भारतीय जनगणना ने इसे लंबे समय तक 'काम' के रूप में मान्यता नहीं दी, क्योंकि यह मजदूरी के लिए नहीं किया जाता है, बल्कि परिवार के संबंध में अवैतनिक श्रम है। महिलाएं खुद ऐसे काम की रिपोर्ट नहीं करतीं क्योंकि वे इसे 'घरेलू' जिम्मेदारियों के रूप में देखती हैं। यहां तक कि जब उनकी गतिविधियों से आय उत्पन्न होती है, तो उन्हें अनदेखा किया जा सकता है । यदि वे अन्य घरेलू कामों के बीच में फंस जाते हैं (कृष्णा राज 1990; कृष्ण राज और पटेल

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

1982)। इस प्रकार महिलाओं द्वारा किये जाने वाले कार्य को उस श्रम की श्रेणी में नहीं रखा गया जिसे आजीविका के संसाधन के रूप में देखा जा सके।

श्रम विभाजान के भेद और स्त्री द्वारा किये जाने वाले घरेलू कार्यों के निष्पादन को श्रम की श्रेणी में न गिने जाने और स्त्री द्वारा इस सम्बन्ध में मौन साध लेने के पीछे का कारण स्त्री की जन्म से की गई परवरिश, शिक्षा, बोध का स्तर और सामाजिक ढांचे में स्त्री की परम्परागत छवि है। जहाँ सामाजिक ताने-बाने में परम्पराओं और मान्यतों के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व को घरेलू कार्यों तक सीमित कर दिया गया और इस दायरे को उसके अनिवार्य कर्तव्य के साथ अभिन्न रूप से जोड़ दिया गया। इसी के साथ जन्म से ही स्त्री को समाज द्वारा तय किये गए लिंग आधारित प्रतिमानों के अनुसार ढलने का न केवल प्रशिक्षण दिया गया बल्कि स्त्री-पुरुष की शारीरिक एवं मानसिक संरचना में कमजोर और बलशाली की अवधारणा को कुछ इस प्रकार से आरोपित किया गया कि घरेलू कार्यों के निष्पादन की अनिवार्यता के अनुरूप स्त्रियों ने भी स्वयं को ढाल लिया। किन्तु शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं तर्क करने अपने अधिकार के फलस्वरूप धीरे-धीरे ही सही स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई हैं और वर्चस्वादी मानसिकता के विरुद्ध, घर, समाज, कार्य-स्थल पर लिंग के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठा रही हैं। (वीनू,2022. 232)) महिलाओं को भी पुरुषों की भांति उचित प्रशिक्षण और सार्वजनिक श्रम में सामान भागीदारी द्वारा समान वेतन का भुगतान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक श्रम अभी भी आवश्यकता से बाहर श्रम के साथ जुड़ा हुआ है। (वीनू, 2018. 237)

परिस्थितिकी-

भारत में सबसे प्रसिद्ध पर्यावरण-नारीवादी, वंदना शिवा, पूंजीवादी आधुनिकता की एक बड़ी आलोचना द्वारा अपना तर्क देती हैं, जिसे वह एक 'मर्दानावादी' परिप्रेक्ष्य के रूप में देखती हैं। परिस्थितिकी के अंतर्गत

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

पुरुषवादी दृष्टिकोण वनों को उसके मौद्रिक मूल्य के लिए उपयोग किए जाने वाले संसाधन के रूप में मानता है और वन संपदा में निजी संपत्ति की स्थापना करता है। दूसरी ओर, इन जंगलों में पीढ़ियों से रहने वाले स्वदेशी लोगों के पास एक विविध और आत्म-प्रजनन प्रणाली के रूप में वनों का एक स्त्री, जीवन-रक्षक दृष्टिकोण है, जो आम विचारों की विविधता (शिव 1999) द्वारा साझा किया गया है। शिव के 'स्त्री सिद्धांत' के निहित उच्च-जाति के हिंदू संस्करण ने, हालांकि, अन्य दृष्टिकोणों से पर्यावरण के बारे में लिखने वाले नारीवादियों को परेशान किया है। इस प्रकार, बीना अग्रवाल (1999) शिव के विश्लेषण की आलोचना करते हुए 'नारीवाद' और 'स्त्री' दोनों की अनिवार्यता की ओर इशारा करती हैं और वंदना शिव की इस धारणा पर सवाल उठाती हैं कि वनवासियों के बीच समुदाय के पूर्व-औपनिवेशिक रूप अधिक लोकतांत्रिक थे। अग्रवाल इन चिंताओं को दूर करने के लिए पर्यावरण-नारीवाद के स्थान पर 'पर्यावरण नारीवाद' शब्द प्रस्तुत करती हैं (अग्रवाल 1999)। पारिस्थितिकी और औद्योगीकरण का एक स्पष्ट रूप से समाजवादी-नारीवादी विश्लेषण गैब्रिएल डिट्रिच द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जो दशकों से दक्षिणी भारत के मदुरै में रहते हैं और इस विषय पर काम कर रहे हैं। डिट्रिच भारत में एक समाजवादी नारीवादी समूह का हिस्सा हैं, जो मारिया मिस के रोजा लक्जमबर्ग के पढ़ने से प्रभावित हैं, जो पूंजीवाद को कई आंतरिक उपनिवेशों के निर्माण के रूप में देखती हैं, जिनमें से महिलाएं 'अंतिम उपनिवेश' हैं (मिस, बेनहोल्ट-थॉमसन और वॉन वेर्लहोफ 1988)। डिट्रिच की समझ में एक समाजवादी नारीवादी दृष्टि को, महिलाओं को, 'अंतिम उपनिवेश', अन्य 'आंतरिक उपनिवेशों', जैसे कि दलितों, आदिवासियों (स्वदेशी लोगों), असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों और अल्पसंख्यकों के साथ गठबंधन में लाना चाहिए। अर्थात् सामूहिक उत्थान की प्रक्रिया में लाना चाहिए। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत के दलितों में मछली पकड़ने के उद्योग के पूंजीवादी परिवर्तनों से विस्थापित मछुआरे लोगों के

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

समुदायों के साथ-साथ इस तरह की पारिस्थितिक रूप से अस्थिर प्रथाओं से विस्थापित अन्य श्रमिक समुदाय शामिल होंगे। उनके अनुसार पारिस्थितिक चिंताओं को अपने समाजवादी नारीवाद के केंद्र में रखते हुए - 'गहराता पारिस्थितिक संकट वैश्विक पूंजीवाद की "कुल बाजार" नीतियों में सबसे गहरा विरोधाभास है' (डाइट्रिच 2003: 4549), डिट्रिच (2014) इस सम्बन्ध में वे राष्ट्रीय गठबंधन के उदाहरण का हवाला देते हैं और साथ ही ऐसे गठबंधन निर्माण पर काम करने वाले जन आंदोलन को इसका श्री भी देते हैं । पारिस्थितिकी के क्षेत्र में स्त्री की भूमिका और हिस्सेदारी को असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत लाकर उसके रोजगार के अधिकार के हनन से जोड़कर इसे देखा जा सकता है । श्रम-विभाजन के समय स्त्री और पुरुष के मध्य किये जाने वाले भेदभाव को जेंडर आधारित बना कर देखने की मानसिकता के विपरीत वैश्विक बाजार में स्त्री की भूमिका को सुनिश्चित करने के प्रयास किये जाने चाहिए (वीनू,2022. 326)।

निष्कर्ष-

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जेंडर शिक्षा और नारीवाद एक-दूसरे से न केवल सम्बद्ध हैं बल्कि स्वस्थ समाज के निमार्ण हेतु महत्वपूर्ण कारक भी हैं । 'स्त्री और पुरुष की पहचान सामाजिक रूप से प्राचीन ग्रंथों के साथ-साथ भौतिक रूप से कठोर, सजातीय और श्रम प्रतिबंधों के सख्त नियमों द्वारा निर्मित होती है, एक भौतिकता जिसे सदियों से दोहराया जाता रहा है। इसके अलावा, लगभग अठारहवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक, विभिन्न प्रकार की राजनीतिक लामबंदी द्वारा स्त्री और पुरुष के लिंगभेद को भी सैन्य रूप से जोड़ दिया गया है। इस प्रकार, स्त्री और पुरुष के मध्य की असमानता या स्त्री को दोयम दर्जे पर रखने की मानसिकता सामाजिक रूप से निर्मित है और इसकी वास्तविक भौतिक अभिव्यक्तियाँ बहुत कठोर हैं जिनमें सुधार की नितांत आवश्यकता है। इस प्रकार, नारीवादी आलोचनात्मक सिद्धांत समकालीन भारत में स्त्री-पुरूष संबंधों के लगभग सभी विश्लेषणों के साथ प्रतिध्वनित होता है। इसलिए भारत में नारीवादी विश्लेषण

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

को स्त्री जाति के साथ भेदभाव और उसकी अस्मिता एवं अस्तित्व के साथ गंभीरता से जोड़कर देखने की जरूरत है ताकि खुद को और साथ ही भारत में आधी आबादी के भूभाग को नया रूप दिया जा सके।

सन्दर्भ सूची-

अग्रवाल, बी. 1999. 'द जेंडर एंड एनवायरनमेंट डिबेट: लेसन्स फ्रॉम इंडिया'। में

जेंडर एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया, एन मेनन द्वारा संपादित। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,

पीपी 96-142।

दल्ला कोस्टा, एम। और जेम्स, एस। 1972। महिलाओं की शक्ति और तोड़फोड़

समुदाय। ब्रिस्टल: फॉलिंग वॉल प्रेस।

दातार, सी. 1989. वेतन परिवर्तन: निपानी संगठन में महिला तंबाकू श्रमिक। नई दिल्ली:

महिलाओं के लिए काली।

डिट्रिच, जी। 2003। 'महिला आंदोलन से पहले समाजवादी दृष्टि और विकल्पों का नुकसान',

इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 38 (43): 4547-4554।

डिट्रिच, जी। 2014। 'नारीवादी-समाजवादी परिवर्तन नव-उदार पूंजीवाद का सामना करना पड़ रहा है',

मेनस्ट्रीम वीकली, एलआईआई (48) 22 नवंबर।

दत्ता, एम। 2016। 'श्रम भूगोल में जीवन की कहानियों का स्थान: यह क्यों मायने रखता है?', जियोफोरम,

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

77: 1-4।

फैनन, एफ। 2003। 'ब्लैकनेस का तथ्य'। पहचान में: जाति, वर्ग, लिंग और राष्ट्रीयता,

एलएम अल्कोफ और ई मेंडिएटा द्वारा संपादित। ऑक्सफोर्ड और बर्लिन: ब्लैकवेल पब्लिशिंग,

पीपी. 62-74.

गोपाल, एम। 2013। 'जाति / लिंग / श्रम में टूटना और प्रजनन', आर्थिक और

पॉलिटिकल वीकली, 48 (18): 91-97।

हेन्समैन, आर। 2011। 'घरेलू श्रम बहस का पुनरीक्षण: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य',

ऐतिहासिक भौतिकवाद, 19 (3): 3-28।

हुनसवादी, एस. 2011। 'कर्नाटक में महिलाओं के लिए दैनिक काम के घंटे बढ़ेंगे',

डीएनए इंडिया, 23 फरवरी। 27 सितंबर 2017 को एक्सेस किया गया, http://www.dnaindia

.com/bangalore/report_daily-working-hours-for-women-all-set-to-go-up-in

karnataka_1511640.

जॉन, एम। 2013। 'महिलाओं के श्रम की समस्या: कुछ आत्मकथात्मक दृष्टिकोण',

इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 20 (2): 177-212।

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

कन्नाबिरन, के। 1995। 'न्यायपालिका, सामाजिक सुधार और "धार्मिक वेश्यावृत्ति" पर बहस में औपनिवेशिक भारत', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 30 (43): डब्ल्यूएस 61-71।

कृष्णा राज, एम। 1990। 'भारतीय जनगणना में महिलाओं का काम', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 25 (48/49): 2663-2672।

कृष्णा राज, एम. और पटेल, वी. 1982। 'महिला मुक्ति और राजनीतिक अर्थव्यवस्था' गृहकार्य: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य', महिला अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय, 2 (जुलाई): 16-19।

मेनन, एन। 2012। एक नारीवादी की तरह देखना। नई दिल्ली: पेंगुइन और जुबान

वीनू, स्त्री विमर्श की सांस्कृतिक चुनौतियाँ ,परिस्थितियों से जूझती नारी विभिन्न ,(2020) .पृ ,104-112 , ISBN-978-93-87941-540

वीनू, गुलाम मंडीबहुभाषी अंतर्राष्ट्रीय] जनकृति ,कुमार गौरव ,मिश्रा .सं ,एक आलोचनात्मक अध्ययन : [मासिक पत्रिका, ISSN:2454 -2725, IMPACT FACTOR: 2.02024 वर्ष ,, अंक 36-37, अप्रैल- ,मई2018 .पृ ,232-238.

वीनू, विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा पंखहीन'' में स्त्री अस्मिता, संपादक द्वयमाणिक और जितेन्द्र यादव-, अपनी माटी, ISSN :2322-0724, UGC CARE Listed Issue, अंक-39, जनवरीमार्च-, 2022

वीनू, हृदयेश की आत्मकथा जोखिम'' में स्त्री, संमिश्रा ., कुमार गौरव, जनकृति बहुभाषी अंतर्राष्ट्रीय] [मासिक पत्रिका, ISSN:2454 -2725, IMPACT FACTOR: 2.0202 ,मार्च-फरवरी ,संयुक्त अंक , 2022 .पृ ,323-333

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

वीनू, मुद्राराक्षस की कहानियों में प्रतिरोध के स्वर .सं ,'सुमन'सुनील कुमार .डॉ ,, The Perspective (International Journal of Social Science And Humanities), ISSN: 2582-6964, वोल्यूम 1-2, संयुक्त अंकनवम्बर ,,2020 -अप्रैल,2021 , पृष्ठ-96-104

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

A study of principal's Attitudes towards Total Improvement of Quality Education at Primary level in Dang district

Dr. Mukeshbhai N. Tandel
PrincipalSmt. S.B. Gardi B.Ed. College, Dhrol, Dist. Jamnagar.

1. Introduction

Our society wants that the children should be given quality education. Now days parents have become aware of the quality of education. So it has become necessary for schools to maintain the qualitative management.

Primary education is considered to be the basic education. Primary education should lead the children to be successful citizen of the country. After getting the primary education, children are expected develop the basic skills of life. Basic aim of the education is to develop independent thinking skill and free expression of one self. But our education system has failed to achieve such basic goals. To improve the standard and quality of education, government has announced educational programme like "Gunotsav" and "Pravesotsav"

Today in the world of globalization quality is considered to be the great measurement. In the field of education, quality is created by many means. Total quality in educational field has great importance of attitude and attitude measurement. If principal has positive attitude towards teachers and children, education will be more qualitative and effective. Tribal area situated at the south of Gujarat called "Dang" is much undeveloped. But in last recent year, it has got some qualitative and quantitative education. Considering this situation present study has been undertaken to study the principal's attitudes towards total quality improvement at primary level of Dang district.

2. Review of related literature

To give proper direction to research process, researcher, has studies research abstract, books, journals, magazine, thesis etc,.

Raval (1971) studied secondary school teacher attitudes towards teaching profession. Andhariya (1971) studied Saurashtra Adhyapan Mandir's trained attitudes

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

towards training. Sud (1974) studied various science and scientists in India. Mathur (1987) studied teacher's attitudes towards creative teaching and learning, Bhatt (1996) studied primary teacher's attitudes towards skill based education.

3. Statement of the Problem

Considering the above facts, the present study is titled as following.

"A study of principals attitudes towards the total improvement of quality education at primary level in Dang district."

4. Definition of the terms

Principal definition of the research title terms as given below.

- **Dang district :**
  It is the last district of South Gujarat. In present study information will be collected from all the primary schools and institutions related the primary education and the principal attitudes towards total quality improvement at primary level will be studied.

- **Primary education :**
  In present study primary education consist of a link between of pre-primary education and secondary education in which student aged from 5 to 14 years are given primary education.

- **Total quality :**
  Quality of Education may be defined as its effecting in achieving its objectives.

- **principals :**
  Principal are the responsible person appointed by the authority as per the rules after having five years of experience at primary level.

- **Attitude :**
  In present study, attitude means scores of the principal attitudes towards total quality improvement at primary level based on the "Attitude measurement" test prepared by the researcher.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

5. Objectives of the Study

1. To study the attitudes related to the Educational Planning and Implementation in Dang district's Primary Schools.
2. To study the attitudes related to the Physical resource and Information Technology in Dang district's Primary Schools.
3. To study the attitudes related to the Classroom interaction and evaluation in Dang district's Primary Schools.
4. To study the attitudes related to the co-ordinations and extra curriculum activities in Dang district's Primary Schools.
5. To study the attitudes related to the Supremacy in leadership in Dang district's Primary Schools.
6. To study the attitudes related to the School environment and human related attitudes in Dang district's Primary Schools.
7. To study the attitudes related to the Life oriented activities in Dang district's Primary Schools.
8. To study the attitudes related to the Sex, Education Eligibility, Teaching experience, Age, Types of Schools Management in Dang district's Primary Schools.

6. Hypothesis

1. There will not be any significant difference between the average of attitudes of Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities in male and female Principal's towards total quality improvement in Primary School education.
2. There will not be any significant difference between the average of attitudes of Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities in Educational eligibility Principal's towards total quality improvement in Primary School education.

3. There will not be any significant difference between the average of attitudes of Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities in teaching experience Principal's towards total quality improvement in Primary School education.

4. There will not be any significant difference between the average of attitudes of Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities in types of school management Principal's towards total quality improvement in Primary School education.

5. There will not be any significant difference between the average of attitudes of Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities in any age Principal's towards total quality improvement in Primary School education.

7. Variables taken in to the study

Independent variable:

Sex, Education Eligibility, Teaching experience, Age, Types of Schools Management.

Dependent variable:

Educational Planning and Implementation, Physical resource and I.T., Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

Controlled variable:

Dang district's Primary Schools.

8. Importance of the Study:

This study be useful to carry forward the approach of total quality improvement at Primary level. This study will be useful to know the Principals attitude towards total quality improvement in education at Primary level of Dang district. It will be helpful to know the effect of gender, educational qualification, teaching experience, area and age on the attitudes of male and female Principals of Primary Schools towards total quality improvement. The present study will be useful to the administrations of the educational institutes. Knowing the Principals attitude towards total quality improvement at Primary level in Dang district. This approach will be successful implemented. This study will be useful in taking value based decision in backward area to improve the quality of education. The present study will be important to made reforms in quality education at Primary level in Dang district. The present study will be useful to social workers to know the principals attitudes towards total quality improvement and to know other factors affecting the approach.

9. Delimitation of the study:

This study is limited to the principals of the Dang district of Gujarat. Attitude scale is only used as tool of the study.

10. Population and sampling:

All the Primary Schools of the Dang district is the population of the study. Principal of 50 schools out of 442 schools are taken as a sample using the Random Sampling Method.

11. Tool:

Attitude scale is used as a tool to collect the data in the present study.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

12. Analysis of the Data:

In the present study data is analyzed by using statistical method such as F-test, T-test, Chi-square and Analysis of Variance.

13. Conclusion:

1. Female and Male Principal of Primary Schools in Dang District have common positive attitudes towards Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

2. Educational eligibility Principal of Primary Schools in Dang District have common positive attitudes towards Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

3. Teaching experience Principal of Primary Schools in Dang District have common positive attitudes towards Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

4. Types of school management Principal of Primary Schools in Dang District have common positive attitudes towards Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

5. Any age Principal of Primary Schools in Dang District have common positive attitudes towards Educational Planning and Implementation, Physical resource and Information Technology, Classroom interaction and evaluation, co-

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

ordinations and extra curriculum activities, Supremacy in leadership, School environment and human related attitudes, Life oriented activities.

Reference:

- Pandiya, S. R. (2010) ***Learning and Teaching Stule***. New Delhi: APH Publication Corporation.
- Shah, D. B. (1993) ***Education Teching for Devloping Teaching Competence.*** Surat: Gavendra Prakashan.
- MCHerry, R. (1993). Encyclopaedia B ritanica, 15th Edition vol. 4.
- Mouly, G. J. s1977fPThe Science of Educational Research. New Delhi : Eurasia Publishing House Pvt. Ltd.
- Mehrotra, L.P. □nd□□□***Introduction to psychological testing,*** Research Methods and Statistical Management, Allahabad.
- Pandiya, S. R. (2010) ***Learning and Teaching Stule***. New Delhi: APH Publication Corporation.
- Shah, D. B. (1993) ***Education Teching for Devloping Teaching Competence.*** Surat: Gavendra Prakashan.
- Siddiavi, M. H. (2009). ***Techniques of Teaching.*** New Delhi: APH Publication Corporation

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

ગ્રંથાલય અને માહિતી સેવાઓમાં આઇ.સી.ટી.ની અસરકારકતા

Dr. Manisha N. Gurjar
Associate Professor
Akar Adhyapan Mandir
M.Ed. College,Ognaj,
Ahmedabab

- **પ્રસ્તાવના :**

અર્વાચીન યુગ માહિતી વિસ્ફોટનો યુગ છે. આ યુગમાં માહિતી અને પ્રત્યાયન વધુ ઝડપી બનતું જાય છે. આ ઉપરાંત વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજીમાં દર વર્ષે વધારો થતો જાય છે. ઇલેક્ટ્રોનિક્સ મીડિયાનો પ્રભાવ વધતો જાય છે. આથી માનવીનું ઔદ્યોગિક સમાજમાંથી માહિતી ઇચ્છુક સમાજનમાં પરિવર્તન થતું જાય છે. જ્યાં માહિતી અર્થે શીઘ્રતા, ચોક્સાઇ તથા ઉદ્યમ અપેક્ષિત રહ્યા છે. આ માટે ગ્રંથાલયો પોતાની વિશિષ્ટ ભૂમિકા ભજવે છે. ગ્રંથાલયો કમપ્યુટરાઇઝડ્ થવાથી માહિતી કમ્પ્યુટરની હાર્ડ ડિસ્કમાં સંગ્રહવામાં આવી. આમ, ગ્રંથાલયો એ માત્ર પુસ્તકો કે સામયિકોનો જ સંગ્રહ નથી પરંતુ પ્રત્યાયન, જ્ઞાન અને માહિતીનાં વિતરણનું એક અગત્યનું સાધન છે. આ સંદર્ભમાં પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં માહિતી સંપ્રેષણની, માહિતી અને સંપ્રેષણ પ્રૌદ્યોગિકની વ્યાખ્યા તથા ગ્રંથાલય દ્વારા આપવામાં આવતી વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ અને ગ્રંથાલય તથા માહિતી સેવાઓમાં આઇ.સી.ટી.ની અસરોની વિસ્તૃત ચર્ચા કરવામાં આવી છે

- **માહિતી - વ્યાખ્યા :**

"અભ્યાસ, અનુભવ, સૂચના કે કમ્પ્યુટરમાં દાખલ કરેલ ડેટાના આધારે તારવેલું અર્થપૂર્ણ સત્ય કે જ્ઞાન એટલે માહિતી."

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

"માહિતી એટલે જે માહિતગાર કરે તે."

"કોઇ તથ્ય, પરિસ્થિતિ કે સમાચારનું પ્રત્યાયન એટલે માહિતી."

"Information means the meaning assigned to data by known convention."

- **સંપ્રેષણ - વ્યાખ્યા :**

"સંપ્રેષણ એક વ્યક્તિથી બીજી વ્યક્તિ સુધી માહિતી અને સમજ પહોંચાડવાની પ્રક્રિયા છે."

"સંપ્રેષણ એ બે કે બે કરતા વધુ વ્યક્તિઓ વચ્ચે થતો હકીકતો, વિચારો, અભિપ્રાયો અને સંવેગોનો વિનિયોગ છે."

- **માહિતી અને સંપ્રેષણ પ્રૌદ્યોગિકી :**

"માહિતી અને સંદેશનું સર્જન, વિસ્તરણ, સંગ્રહ કરવા માટે તથા તેમાં સુધારા-વધારા કરવા માટે અને સંદેશનો વિનિમય કરવા માટે વાપરવામાં આવતી તકનિકી અને સાધનોનો સમૂહ એટલે માહિતી અને સંપ્રેષણ પ્રૌદ્યોગિકી."

ટૂંકમાં માહિતી અને સંદેશ એ બંનેનું સર્જન કરીને તેનું વિતરણ કરવા માટે, તેનો સંગ્રહ કરવા માટે અને તેમાં સુધારા-વધારા કરવા માટે જેટલી પણ તકનિકી અને સાધનોનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે તે તમામનો માહિતી અને સંપ્રેષણ પ્રૌદ્યોગિકીમાં સમાવેશ થાય છે.

આજનો યુગ એ માહિતી વિસ્ફોટનો યુગ છે. વર્તમાન સમયમાં પુસ્તકો, સામયિકો તથા વિવિધ પ્રકારની ટેકનોલોજીની મદદથી વ્યક્તિ વિવિધ પ્રકારની માહિતી વિવિધ સ્વરૂપે પ્રાપ્ત કરે છે. કેટલીક વાર વિવિધ પ્રકારની માહિત તે ગ્રંથાલયમાંથી પણ પ્રાપ્ત કરે છે. આ સંદર્ભમાં ગ્રંથાલય દ્વારા પૂરી પાડવામાં આવતી સેવાઓ તથા માહિતી અને પ્રત્યાયન સેવાઓમાં ગ્રંથાલયની અસરો નીચે મુજબ છે.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- **ગ્રંથાલય દ્વારા આપવામાં આવતી વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ :**

ગ્રંથાલય દ્વારા વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ આપવામાં આવે છે. જે નીચે મુજબ છે.

- ઉપભોક્તાઓને પુસ્તકો આપવા અને લેવા. (ઇસ્યુ-રિટર્ન)

- વાચકોની પસંદગી તથા રસરૂચિ મુજબના પુસ્તકો શોધી આપવા.

- સંશોધક ઉપભોક્તાઓને સંશોધનના કાર્યમાં તથા વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષણના કાર્યમાં મદદરૂપ થવું.

- આંતર ગ્રંથાલય લોન દ્વારા વાચકોને પુસ્તક મેળવી આપવામાં મદદરૂપ થવું.

- વાઙ્મયસૂચિ, સંદર્ભ સેવા તથા માહિતી સેવા આપવી.

- પ્રલેખોનું સંકલન કરી તેને પ્રસારિત કરી સંશોધન કર્તાને સૂક્ષ્મ પ્રતો પ્રદાન કરવી.

- શક્ય હોય તો સારાંશીકરણ (એબસ્ટ્રેક્ટીંગ) સેવા આપવી.

- સંદર્ભગ્રંથોની સૂચિ તૈયાર કરવી.

- ગ્રંથસૂચિનો ઉપયોગ કરવામાં મદદરૂપ બનવું.

- સંદર્ભ પુસ્તકો કે ગ્રંથોમાંથી માહિતી કેવી રીતે શોધવી તેના વિશેની જાણકારી આપવી.

- પુસ્તક પ્રદર્શનનું આયોજન કરવું

- નવા ખરીદેલા પુસ્તકોના મુખપૃષ્ઠ બોર્ડ પર મૂકી નવા પુસ્તકો વિશે માહિતગાર કરવા.

- સામાયિકોના સારા લેખો તથા વર્તમાનપત્રોના કટિંગસ્ બોર્ડ પર મૂકવા.

- વિષયવસ્તુની પૂરક માહિતી જે પુસ્તકમાં આપેલ હોય તેનો નિર્દેશ કરવો.

- વાચકની માંગને ધ્યાનમાં રાખીને પ્રતિલિપિ સેવા, માઇક્રો ફિલ્મ, માઇક્રોકાર્ડ, સી.ડી. વગેરે ઉપલબ્ધ કરાવવા.

- નિર્દેશીકરણ (ઇન્ડેક્સીંગ) સેવા આપવી.

- ગ્રંથાલયમાં આપવામાં આવતી વિવિધ સેવાઓથી લોકોને માહિતગાર કરવા.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- ગ્રંથાલય વિસ્તરણ સેવા પ્રદાન કરવી.
- નિરક્ષરો માટેની વાચન સામગ્રી ખરીદીને તેઓને સાક્ષર બનાવવામાં મદદરૂપ થવું
- સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો અને વ્યાખ્યાનો યોજવા.
- ફરતા ગ્રંથાલયો દ્વારા લોકોની વાંચન ટેવ વધે તે માટેની સેવાઓ પ્રદાન કરવી.

- **ગ્રંથાલય અને માહિતી સેવાઓમાં આઇ.સી.ટી.ની અસરકારકતા :**

ગ્રંથાલય દ્વારા વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ પૂરી પાડવામાં આવે છે. વર્તમાન સમયમાં આઇ.સી.ટી.ના વધતા જતા ઉપયોગના કારણે ગ્રંથાલયનું ક્ષેત્ર પણ તેની અસરમાંથી મુક્ત રહી શક્યું નથી. આ સંદર્ભમાં ગ્રંથાલય અને માહિતી સેવાઓમાં આઇ.સી.ટી.ની અસરો નીચે મુજબ છે.

- વિકસતા જતા વિશ્વમાં વિજાણુયુક્ત માહિતીના ઉપયોગ માટે આઇ.સી.ટી.નું અમલીકરણ કરવું આવશ્યક છે. વળી ગ્રંથાલય સેવાઓની ગુણવત્તા, અસરકારકતા, વિશ્વસનીયતા અને નિયમિતતામાં આઇ.સી.ટી. દ્વારા જ સુધારાઓ કરી શકાય છે.
- કમ્પ્યુટરાઇઝડ્ ગ્રંથાલયો તેમના ઉપભોક્તાઓને આઇ.સી.ટી. આધારિત સેવાઓ પૂરી પાડે છે. જેમાં ઓપેક દ્વારા વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ પૂરી પાડે છે.
- વિજાણુ દસ્તાવેજ વિતરણ, નેટવર્ક આધારિત માહિતી સ્રોતો, ઉપભોક્તાઓના ડેસ્કટોપમાં પૂરી પાડવામાં આવતી માહિતી વિતરણની સુવિધા, ઓનલાઇન ઇન્સ્ટ્રક્શન, ઓનલાઇન રીડર એડવાઇઝરી સર્વિસ વગેરે જેવી સેવાઓ આઇ.સી.ટી.ની મદદથી પૂરી પાડવામાં આવે છે.
- કેટલાક ગ્રંથાલયો ઉપભોક્તાઓને માહિતી આપવા તથા તેમની સાથે પ્રત્યાયન માટે કમ્પ્યુટર , ઇન્ટરનેટ, વેબ, ઇન્ટ્રાનેટ, એક્સ્ટ્રાનેટ અને અન્ય ટેકનોલોજીનો ઉપયોગ કરે છે.
- ગ્રંથાલય સમક્ષ તેમના ઉપભોક્તાઓની નવીન માંગ અને જરૂરિયાતો ઊભી થાય છે. ઉપભોક્તાઓને તેમના કાર્યમાં મદદરૂપ થાય તેવા માહિતીના સ્રોતો અને નવીન અદ્યતન માહિતીની

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

જરૂર પડે છે. ગ્રંથાલયોમાં આઇ.સી.ટી.ના ઉપયોગથી ઉપભોક્તાઓની આ જરૂરિયાતો સંતોષાય છે.

- ઉપભોક્તાઓને નેટવર્ક દ્વારા સ્રોતોની ઉપલબ્ધતા કરાવવી સરળ રહે છે, કારણ કે સામયિકો અને પુસ્તકોની કિંમતમાં થયેલા વધારાને લીધે કોઇ પણ પુસ્તકાલયને બધા જ પ્રકાશનોના પુસ્તકો કે સામયિકો ખરીદવા પરવડી શકે નહિ. નેટવર્ક દ્વારા સ્રોતોની ઉપલબ્ધતા માટે પુસ્તકોનું કમ્પ્યુટરાઇઝેશન કરવું એ પ્રથમ જરૂરિયાત છે. ત્યારે DIALOG, MEDLARS, INIS, AGRIS જેવા ઘણા આંતરરાષ્ટ્રીય ડેટાબેઝ દ્વારા માહિતી ઉપલબ્ધ કરી શકાય છે. જો ગ્રંથાલયો સ્વયં સંચાલિત નહિ હોય તો વૈશ્વિક સ્તરની માહિતી પ્રાપ્ત કરી શકાય નહિ.
- વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજીના આ યુગમાં બધા જ ક્ષેત્રોમાં જ્ઞાન અને માહિતીનું વિસ્તરણ થઇ રહ્યું છે ત્યારે મેન્યુઅલ સંદર્ભસૂચિ ઉપલબ્ધ કરાવવી શક્ય નથી. આથી આઇ.સી.ટી.ની જરૂરિયાત છે.
- ઉપભોક્તાઓની વિવિધ જરૂરિયાત મુજબ તેમની માહિતીની શોધ કરવાની પદ્ધતિઓમાં પણ પરિવર્તન આવ્યું છે. આ જરૂરિયાતો પૂરી પાડવા માટે માહિતી પુનઃપ્રાપ્ત કરવાની પ્રયુક્તિઓમાં આઇ.સી.ટી.ની મદદથી વિવિધ સુધારા કરવા જોઇએ. આમ આઇ.સી.ટી.ના ઉપયોગથી ઉપભોક્તાઓની જરૂરિયાતો સંતોષાતા તેમને વિવિધ લાભ મળે છે.
- આઇ.સી.ટી.ની મદદથી કોઇ પણ ગ્રંથાલય પોતાની સેવાઓ માટે સ્થાનિક, રાષ્ટ્રીય, પ્રાદેશિક તથા આંતરરાષ્ટ્રીય પ્રસિદ્ધિ મેળવી શકે છે.
- નિશ્ચિત સમયમાં ઉપભોક્તાઓને સેવાઓ પૂરી પાડવાનું શક્ય બને છે.
- ઉપભોક્તાઓના રસના વિષયોની સંપૂર્ણ અને નવીન માહિતી પૂરી પાડી શકાય છે.
- જૂથ કાર્યોને ઉત્તેજન આપી શકાય છે.
- ઉપભોક્તાઓને ઝડપથી અને સરળતાથી માહિતી પ્રાપ્ત થાય છે.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- નિયત સમયમાં માહિતી ઉપલબ્ધ થઇ શકે છે.
- ભિન્ન સ્રોતો દ્વારા વિપુલ માહિતી ઉપલબ્ધ થઇ શકે છે.
- ઉપભોક્તા તેની જરૂરિયાત અને સમય અનુસાર માહિતી મેળવી શકે છે.
- ભિન્ન સ્રોતો દ્વારા માહિતીના સંકલન અને પુનઃ નિર્માણની સુવિધા પૂરી પાડે છે.
- આઇ.સી.ટી. ગ્રંથાલયના કાર્યોને સરળ અને ઝડપી, સસ્તા અને વધારે અસરકારક બનાવે છે.
- કમ્પ્યુટરાઇઝ્ડ સિસ્ટમને કારણે માહિતીની પુનઃપ્રાપ્યતા સરળ બનવાથી માહિતીના વિસ્ફોટનું વ્યવસ્થાપન કરવામાં મદદરૂપ થાય છે.
- ગ્રંથાલયમાં કમ્પ્યુટરાઇઝેશન થવાથી જગ્યાના પ્રશ્નો હલ કરી શકાય છે તથા પેપરવર્કમાં ઘટાડો કરી શકાય છે.
- જૂના રેકોર્ડનો સંગ્રહ કરવાનું કાર્ય સરળ બને છે.
- માહિતી સંગ્રહોમાંના દુર્લભ ગ્રંથો, છબીઓ, ધ્વનિ અંકિત પટ્ટીઓ, રંગીન ફિલ્મ વગેરેને સુરક્ષિત રાખવા માટે ડિજીટલ સ્કેનરનો ઉપયોગ કરી તેની કમ્પ્યુટર પ્રતિકૃતિઓ તૈયાર કરવાની અદ્યતન ટેકનોલોજી ગ્રંથાલયોએ અમલમાં મૂકી છે.

- **સમાપન :**

આમ, ઝડપથી પરિવર્તન પામતા યુગમાં માહિતી અને પ્રત્યાયન એ કોઇ પણ વ્યક્તિ માટે ખૂબ જ જરૂરી બન્યું છે ત્યારે ગ્રંથાલયો દ્વારા આપવામાં આવતી વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ તથા તેની પદ્ધતિઓમાં પણ સુધારા વધારા થયા છે. આ માટે આઇ.સી.ટી.નો ઉપયોગ ઉપભોક્તાઓને વિવિધ પ્રકારની સેવાઓ પૂરી પાડવામાં સહાયરૂપ થાય છે.

સંદર્ભસૂચિ :

- Nirmal Harshad, (2013). ***Digital library - Automation.*** Jaipur : Vista Publication.

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- Sethunath V.S., (2012). ***Digital library Systems.*** New Delhi : Crescent Publishing Corporation.
- Singh Pankaj, (2014).***Library and Information Technology.*** New Delhi : Discovery Publishing House Pvt. Ltd..

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

शिक्षा में मीडिया का योगदान

डॉ.भावेश के. शाह
प्रिन्सिपाल
आकार बी.अेड्., ऐम.ऐड्. कॉलेज,
ओगणज, अहमदाबाद

➢ *प्रास्ताविक :*

आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का ऐक बहुत अहम हिस्सा बन चुका है । मीडिया जनसमूह तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुँचाने का एक माध्यम है । यह संचार का सरल और सक्षम माध्यम है । ऐसे युग में जहाँ ज्ञान और तथ्य आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिये औजार है वहाँ रचनात्मक मीडिया की मौजूदगी संपूर्ण समाज, सभी प्रकार के व्यवसाय और अन्य क्षेत्रो की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण है । यह शहरी तथा ग्रामीण जन समूहों को शिक्षित करने, लोगो के बीच उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करने और जरुरतमंदो को न्याय प्रदान करने में सहायता प्रदान करता है । इसमें खास करके प्रिन्ट मीडिया (समाचार पत्र, पत्रिका, जर्नल, अन्य प्रकाशन), इलेक्ट्रोनिक मीडिया (रेडियो, टेलीविजन) तथा इंटरनेट मीडिया समाज में शिक्षा के लिये जागृति का कार्य करते है ।

➢ *मीडिया :*

मीडिया 'मीडियम' (medium) शब्द का बहुवचन है । 'मीडियम' शब्द लैटिन भाषा से उभरकर आया है । मीडिया सामूहिक प्रत्यायन का साधन व मार्ग है, जिसका उपयोग सूचनाये, जानकारी पर्हंचाने के लिये व प्राप्त करने के लिये किया जाता है । प्राचीन काल से लेकर अत्याधुनिक काल तक विभिन्न प्रकार के मीडिया का आविष्कार हुआ है । इस परिप्रेक्ष्य में मीडिया के विभिन्न प्रकार है । जैसे - परंपरागत मीडिया में नाटक, स्ट्रीट थियेटर, पपेट, नृत्य, कहानी, संगीत, पेईन्टींग, संकेत आदि मुख्य है । प्रिन्ट मीडिया में वर्तमानपत्र, सामयिक, बुकलेट, ब्रोशर मुख्य है. इलेकट्रोनिक मीडिया में टी.वी., रेडियो का शामिल किया

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

गया है। – अद्यतन मीडिया में कम्प्युटर, मोबाइल फोन, इन्टरनेट, ई–बुक्स इत्यादिको शामिल किया गया है। इस प्रकार समय के साथ साथ मीडिया के प्रकार में बहोत सारे बदलाग आये है।

- ***शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया की आवश्यकता :***

वर्तमान समय में शिक्षा एक व्यापक क्षेत्र बन चुका है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक तथा अैपचारिक शिक्षा से लेकर अनौपचारिक शिक्षा और दूरवर्ती शिक्षा दूरदराज क्षेत्रो में फैली हुई है। इस शिक्षा को सरल, सर्वव्यापी, छात्र अभिमुख और प्रभावी बनाने में मीडिया का योगदान विशेष है। इस संदर्भ में शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया की आवश्यकता निम्नलिखित है।

- जन संचार के माध्यम से सभी को शिक्षा पहुँचाना, यानि शिक्षा के राष्ट्रीय मूल्य को पूरा करना।
- दिन–प्रतिदिन देश विदेश की सभी घटनाओ से जनसामान्य तथा छात्रो को परिचित करवाना।
- देश के विभिन्न भागो की संस्कृति से जूडे कार्यक्रमो के प्रदर्शन द्वारा छात्रो को अपने देश की संस्कृति से परिचित करना। विभिन्न प्रकार के समाचार के प्रसारण से छात्र को सजग करना व सतेज नागरिक बनाना।
- जन सामान्य की सूचनाओ को शीघ्रता से दूर दूर तक पहुँचाना।
- औपचारिक शिक्षा से संबंधित कठिन संकल्पनावाले पाठो को सरल, सहज तरीके से सभी के लिये उपलब्ध कराना।
- अधिक साधनो के प्रयोगवाले पाठो को प्रदर्शन से सभी छात्रो को उपलब्ध कराना।
- कक्षा में मीडिया के प्रयोग से पाठ्यपुस्तक को सरल व मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक बनाना।

इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विषयो के अैसे बहुत से आयाम है जिनको सरल व आसान तरीके से सिखाने के लिये मीडिया की आवश्यकता है। जिनसे छात्रो को अपनी रुचि के अनुसार आगे बढने के अवसर प्रदान कराये जा सके और अेक शिक्षित युवा वर्ग का निर्माण हो जो देश की अेकता और अखंडितता को बनाये रखने में सक्षम हो।

- ***शिक्षा में मीडिया का योगदान :***

प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक ऐक शिक्षित समाज के निर्माण में मीडिया का विशेष योगदान रहा है। वर्तमान समय में भी शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया अपना अहम योगदान देता आया है जाहे वो

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

प्रिन्ट मीडिया (समाचार पत्र, पत्रिका, जर्नल, अन्य प्रकाशन), इलेक्ट्रोनिक मीडिया (रेडियो, टेलीविजन) या फिर इंटरनेट मीडिया ही क्यों न हो। ये सभी प्रकार के मीडिया समाज में शिक्षा के लिये जागृति का कार्य करते है। शिक्षा में मीडिया का योगदान निम्नलिखित है।

- प्रिन्ट मीडिया के विभिन्न माध्यम जैसे समाचार पत्र, जर्नल, पत्रिका तथा अन्य प्रकाशन में प्रकाशित हुई सामग्री प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा के छात्रो के लिये शिक्षा में सहायक होती है। समाचार पत्रो में रोजाना प्रसिद्ध होने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, भौगोलिक तथा आसपास की विभिन्न घटनाओ व समस्याओ के बारे में छात्रो को पता चलता है। विभिन्न कुदरती आपदा तथा संवेदनशील समाचारो के प्रति छात्रो की संवेदनाओ को जागृत किया जा सकता है, मानव कल्याण के कार्यो के लिये उन्हे प्रेरित किया जा सकता है।
- समाचारपत्रो में प्रकाशित विभिन्न लेख और देश विदेश की विभिन्न जानकारी से छात्र और शिक्षक अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते है। उनकी वैचारिक शक्ति और समस्याओ को हल करने की शक्ति का विकास होता है।
- प्रिन्ट मीडिया सहायता से छात्रो में विभिन्न कौशलो और कार्यो का विकास किया जा सकता है। जैसे कि समाचार पठना, सूचना अेकत्रित करना, नोटबुक में लिखना, स्कूल सभा में प्रस्तुत करना, बुलेटिन बोर्ड पर रखना, अहेवाल तैयार करना इत्यादि।
- विभिन्न विषयो को लेकर प्रकाशित पत्रिकाओ के माध्यम से छात्रों में शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सचेतता ला सकते है।
- विभिन्न जर्नल और सामयिक के माध्यम से छात्र कक्षा और पाठ्यपुस्तक के अलावा विषय से संबंधित नूतन जानकारी प्राप्त कर सकते है। विभिन्न भाषाओं और विषयो मे प्रकाशित जर्नल और सामयिक को पठकर छात्र स्व अध्ययन कर सकते है। कोई खास विषय से संबंधित सामयिक को पठकर छात्र में विश्वबंधुत्व, राष्ट्रप्रेम, सद्भावना, सहकार जैसे मूल्यो का विकास किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त छात्रो में निहित विभिन्न शक्तियों, क्षमता ,कौशल, रस रुचि को बढावा दे सकते है।

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- इलेक्ट्रोनिक मीडिया रेडियो, टेलीविजन का भी शिक्षा में विशेष योगदान रहा है । रेडियो आकाशवाणी पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रम औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित है । शिक्षा के लिये शैक्षिक कार्यक्रम रेडियो पर से प्रसारित होते है । आकाशवाणी से अनेक भाषाओ के शिक्षा का क्रमबद्ध कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है ।
- रेडियो पर स्कूल विषयो पर विद्वान व्यक्तिओ के व्याख्यान एवं चर्चाये भी प्रसारित की जाती है । रेडियो से समाचार सुननेवाले अपने साथ घटनाओकी निकटता का आभास, अनुभव करते है । रेडियो सुननेवाले छात्रो में संवेगात्मक प्रेरणा उत्पन्न करता है । बालको के चरित्र को रेडिया द्वारा शिक्षित किया जा सकता है ।
- रेडियो के माध्यम से किसी भी प्रसिद्ध साहित्यिक कविओं, वक्ताओ, आलोचको, अर्थशास्त्रीओ, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, विज्ञान इत्यादि की आवाज कक्षा में लाई जा सकती है । शिक्षण कला को रोचक बनाया जा सकता है । छात्रो के विशाल समूह को अेकसाथ शिक्षा दी जा सकती है । इसे शिक्षा की कमिया काफी हद तक दूर की जा सकती है ।
- प्रौढ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा तथा जीवनपर्यंत शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो का विशेष रुप से प्रयोग किया जाता है ।
- छात्रो को रेडियो कार्यक्रम के बारे में अपने विचार और आलोचनाये रेडियो स्टेशन पर भेजने के लिये प्रेरित करना चाहिये और उसका प्रसारण करना चाहिये । इसे छात्रो की लेखन कला सुगठित होगी क्योंकि उन्हे स्वयं अपने लिखे हुये विचारो को सुनने का अवसर मिलेगा ।
- रेडियो कार्यक्रमो द्वारा कक्षा में ताजे नवीन खोज समाचारो का प्रसारण होना चाहिये. इसे पाठ्यपुस्तके जो पहले लिखि जा चुकी है उनकी कमियो को पूरा किया जा सकता है । पुराने पाठ्यक्रममें नवीनतम घटनाओं के समावेश न होने की कमी रेडियो द्वारा पूरी की जा सकती है ।
- रेडियो के कार्यक्रम विभिन्न प्रकार के होते है इसलिये उनको चुनने की क्षमता छात्रो में उत्पन्न करना शिक्षक का कार्य और उत्तरदायित्व है । रेडियो के शैक्षिक कार्यक्रमो के सटीक आयोजन से पाठ्य विषयो के विश्लेषण और उनके परस्पर संबंध को समजने में सहायता मिलती है ।

ISSN : 2581-3943
Eklavya
A Quarterly Referred and Peer Reviewed Educational & Research E-Journal
School of Education, Distance Education & Educational Technology
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
(Established by Government of Gujarat, India)
Web: www.baou.edu.in email: eklavya@baou.edu.in
Editor: Prof. (Dr.) Ahjitsinh P.Rana Year: Dec 2021- May 2022 Issue: 8

- वर्तमान समय में मीडिया के आधुनिक स्वरूप जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया में हर जगह किसी खास विषय, अवसर या परीक्षा से जूडे ग्रुप्स या कम्युनिटीज मौजूद होते है, जिनमें लोग उस विषय या अवसर से जुडी हर महत्त्वपूर्ण और नवीन जानकारी शेयर करते है।
- सोशल मीडिया पर छात्र अपना स्वयं का ग्रुप तैयार कर सकते है, जिसमे वे अपने सहपाठियो, अध्यापको, विषय से जुडे अन्य विशेषज्ञो को शामिल कर सकते है। इससे पठते दौरान किसी विषय में कोई समस्या आ रही हो तो छात्र देर किये बिना अपने सहपाठियों, अध्यापको या विशेषज्ञो से मदद ले सकते है। ग्रुप में ज्यादातर लोग छात्र की पहचान के ही होंगे तो उनसे संवाद करते समय भाषा की कोइ रुकावट नहीं रहेगी।
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ईग्नु का स्टडी चैनल, बायसेग, अेन.डी.अेल., मेसिव ऑपन ऑनलाइन कोर्स, स्टडी वेब ऑफ अेक्टीव लर्निंग फॉर यंग अेस्पीरींग, स्वयम् प्रभा, डी.टी.अेच. चेनल, ई-शोध सिंधु, वर्च्युअल लेब, ई-यंत्र, केम्पस कनेक्ट कनेक्टिविटी, ई-आचार्या, ध फ्री अेन्ड ओपन सोर्स सोफ्टवेर फोर अेज्युकेशन, ई-विद्वान, सेन्ट्रल क्लाउड इन्फ्रास्टकचर जैसे बहोत सारे आधुनिक मीडिया सोर्स उच्च शिक्षा ले रहे छात्रों के लिये उपयोगी है। यहां विषय के अेक्सपर्ट और प्रोफेसर्स द्वारा तैयार की गई शैक्षिक सामग्री को रखा जाता है और वीडियो लेकचर भी अपलोड किये जाते है।

➢ *समापन :*

वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र में मीडिया का विशेष योगदान रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में मीडिया के योगदान को देखकर कहा जा सकता है कि मीडिया छात्रो के सर्वांगी विकास में सहायक है। प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा और आजीवन शिक्षा के लिये मीडिया की अहम भूमिका है।

संदर्भ सूचि

- प्रवीर राकेश, *मीडिया का वर्तमान परिदृश्य.* प्रभात प्रकाशन.
- अग्रवाल बिंदो सी. (र००र) *हायर अेज्युकेशन थ्रु टेलीविजन : ध इन्डियन अेक्सप्रेस.* कन्सेप्ट पब्लिकेशन : न्यू दिल्ही.
- आर्य पी.के. (र००७). *इलेक्ट्रोनिक मीडिया.* प्रतिभा प्रतिष्ठान : न्यू दिल्ही.